(IIJIF) Impact Factor - 3.234

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International *Peer Reviewed* Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Dr. Reeta Yadav
Dr. Pradeep Kumar

Volume 10 Issue III July 2020

SP
A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW
Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
www. shodhprerak.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747
Cite this Volume as S/P, Vol. 10, Issue III, July 2020

- पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता एवं भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन 223-225
  सन्त कुमार तिवारी, शोध छात्र (राजनीति विज्ञान),डा. रा.म.लो. अवध वि.वि., अयोध्या
- धूमिल की कविताओं में समकालीन अनुभव और मूल्य-दृष्टि प्रतिपादन 226-229
  नीलम चतुर्वेदी, शोध छात्रा, हिंदी विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)
  डॉ. दिवाकर पाण्डेय, शोध निदेशक, प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,एच.डी. जैन कॉलेज, आरा,वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
- फुइयांजन' उपन्यास और जल संकट की समस्या 230-232
  सदानन्द, शोधार्थी, पीएचडी हिंदी दिल्ली विश्वविद्यालय
- दक्षिण भारतीय कृषि का स्वरूप तथा विकास 233-234
  डॉ. कुश कुमार, इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)
- "कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास में 'सरना फूल' पत्रिका का योगदान" 235-239
  सुमन्ती तिर्की, शोधार्थी यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ., जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
- पंचपरगनिया गद्य साहित्य में प्रतिबिम्बित झारखण्ड की संस्कृति 240-244
  रीता कुमारी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, M.A., UGC NET/JRF
- मुण्डारी भाषा का उद्‌भव और विकास 245-249
  करम सिंह मुण्डा, सहायक प्राध्यापक, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
- "नागपुरी भाषा - साहित्य के विकास में डॉ. सुरेश चन्द्र राय का योगदान" 250-254
  कमला लोहार, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, M. A. UGC NET/ JRF JR
- हो आदिवासी के साहित्य समाज और संस्कृति : झारखण्ड के संदर्भ में 255-260
  डॉ. इन्दिरा बिरुवा, शोधार्थी, डी.लिट् जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची
- कुँडुख़ साहित्य का एक अंग - लोकगीत 261-263
  चाँदनी कुमारी, शोधार्थी,जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,राँची विश्वविद्यालय, राँची
- भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में अग्नि का अवदान 264-266
  शान्ती देवी, शोधछात्रा, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
- सोशल मीडिया की संभावनाएं और सीमाएँ 267-270
  रमापति यादव, शोधार्थी(समाजशास्त्र विभाग), राजा श्री कृष्ण दत्त पी.जी. कालेज, जौनपुर
- 'मॉडल स्कूल' एवं सामान्य विद्यालय प्रबंधन में समस्याओं का अध्ययन 271-274
  भरत प्रसाद गुप्ता, (शोधार्थी), शिक्षा विभाग, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
  डॉ अनिता सिंह, (सहा. प्राध्यापक), (शोधार्थी), शिक्षा विभाग, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

'मॉडल स्कूल' एवं सामान्य विद्यालय प्रबंधन में समस्याओं का अध्ययन

*भरत प्रसाद गुप्ता**
*डॉ अनिता सिंह***

सारांश– शिक्षित समाज के निर्माण में केवल विद्यालय परिवार की जिम्मेदारी नही होती है। बल्कि यह सम्पूर्ण समाज का उत्तरदायित्व होता है। इस ओर ध्यान देते हुए ही शिक्षा के अधिकार के अधिनियम 2009 के धारा 21 में शाला प्रबंधन में अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता को महत्व दिया गया है। इसके द्वारा समाज अपने लिए उपयुक्त नागरिकों का निर्माण कर सकता है और देश को एक नये विकास के पथ पर मोड़ सकता है। इस अध्ययन में शोधार्थी ने मॉडल स्कूल एवं सामान्य स्कूल में प्राचार्य, शिक्षकों, समुदाय तथा पालकों की समस्याओं का अध्ययन किया है। इसके लिए शोधार्थी ने स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची से आंकड़ों का संग्रहण किया है। इस अध्ययन के आधार पर यह पाया गया है कि विद्यालय के मुख्य स्टेक होल्डर्स को संचालन में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

मुख्य शब्द– विद्यालय संचालन, शैक्षिक समस्या, समुदाय, पालक।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में महत्वपूर्ण माध्यम है। किसी भी विद्यालय का संचालन एक ओर से नही हो सकता है। संचालन के लिए विद्यालय के विभिन्न स्तंम्भों यथा– प्राचार्य, शिक्षक, पालक, समुदाय इत्यादि को अपना कार्य समयानुसार एवं निष्ठापूर्वक करना पडता है। शिक्षा गुणवत्ता में वृध्दि व अपेक्षित सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जिसके कारण किसी भी विद्यालय में अच्छा शैक्षणिक वातावरण उत्पन्न होता है। बच्चों के शिक्षा में माता पिता और समुदाय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी आधार पर निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के धारा 21 मे शाला प्रबंधन में अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता को सुनिश्चित किया गया है। जिसके तहत शासकीय विद्यालय और अनुदान प्राप्त स्कूलों शाला प्रबंध समिति का गठन करने का निर्देश है। शिक्षा में पालक एवं समुदाय का महत्व तभी होता है जब वह शिक्षा के प्रति जागरूक एवं सजग होने के साथ शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा प्रदान करें एवं वृध्दि हेतु प्रयत्नशील हों।

विद्यालय संचालन में कई बार यह दृष्टिगत होता है कि प्राचार्य, शिक्षक, पालक एवं समुदाय के सदस्यों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

एनी टी. हेन्डरसन एण्ड केरेन एल. मैप्प (2002)–द न्यू वेव ऑफ एविडेन्सः द इम्पैक्ट ऑफ स्कूल, फैमिली एन्ड कम्यूनिटी कनेक्शन्स ऑन स्टूडेन्ट अचीव्हमेंट मे पाया कि विद्यालय, परिवार, सामुदायिक भागिदारी एवं छात्रों के सफलता के बीच सार्थक धनात्मक सह–संबंध होता है। **एन.एन.ई.ए. पॉलिसी ब्रीफ नेशनल एजुकेशन एसोसिएशन (2008)** के अनुसार जब विद्यालय, पालक, परिवार और समुदाय मिलकर सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। तब छात्र अच्छे ग्रेड लाना, प्रतिदिन विद्यालय आना, विद्यालय मे अधिक समय तक रूकना तथा उच्चस्तरीय कार्यक्रमों मे भाग लेना दर्शाते हैं। **कोल (2007)** ने लिखा है कि सामुदायिक सहभागिता द्वारा शैक्षिक योजना और विकास के लिए समुदाय सहयोग आवश्यक है। **पुतनम (2000)** ने बताया है कि सामुदायिक सहभागिता का अर्थ लोगों के शैक्षिक

* (शोधार्थी), शिक्षा विभाग, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
** (सहा. प्राध्यापक), (शोधार्थी), शिक्षा विभाग, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

व्यवस्था की ओर ध्यान देने (एंगेजमेंट) से है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण एवं लंबे अन्तराल के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ा देता है। **सिंह, आर. (2017).** ने अपने लेख जन–प्रतिनिधियों की शैक्षिक सजगता का अध्ययन. शैक्षिक परिसंवाद में देखा कि जन–प्रतिनिधियों की शैक्षिक–सजगता औसतन थी और विधान सभा एवं विधान–परिषद् सदस्यों की उच्च स्तर की थी।

अध्ययन के उद्येष्य–

1. मॉडल स्कूल एवं सामान्य स्कूल में प्राचार्य, शिक्षकों, समुदाय तथा पालकों की समस्याओं का अध्ययन करना।

मान्यताएं–

1. विद्यालयों के संचालन में प्राचार्य, शिक्षकों, समुदाय तथा पालकों को समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

जनसंख्या–

इस अध्ययन में जनसंख्या छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग में स्थित सभी पांच जिलों के 21 मॉडल स्कूल एवं उसके निकट स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक, पालक, समिति समुदाय हैं।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में सोद्येश्यपूर्ण न्यादर्श चयन प्रक्रिया का उपयोग करते हुए छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग के जिले में स्थित पांच मॉडल स्कूल एवं उसके निकट शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के एक–एक प्राचार्य, शिक्षकों को लिया गया है। पालकों तथा समुदाय को सामूहिक रूप में लिया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में स्वयं निर्मित साक्षात्कार का उपयोग किया गया है।

आंकड़ों का संग्रहण

आंकडों का संग्रहण करने के लिए प्राचार्य एवं शिक्षकों का व्यक्तिगत साक्षात्कार लिया गया। पालकों तथा समुदाय सदस्यों का समूह साक्षात्कार लिया गया है।

आंकड़ो का विश्लेषण–

आकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक विधि से किया गया है। जिसमें प्राचार्य, शिक्षक का व्यक्तिगत साक्षात्कार लेकर उसका विश्लेषण किया गया है। पालकों एवं समुदाय के सदस्यों का समूह के रूप मे साक्षात्कार लेकर उसका विश्लेषण किया गया है।

परिणाम–

मॉडल स्कूल से संबंधित व्यक्तियों को निम्न प्रकार से समस्याएं उत्पन्न हुई हैं–

1 प्राचार्यो को संबंधित समस्याएं

1. प्रायः प्राचार्यों ने यह बात कही की कुछ अभिभावक ऐसे होते हैं जो अपने बच्चे की पढ़ाई की ओर ध्यान नही देते हैं। इनमें से एक प्राचार्य ने प्रश्न के जवाब मे कहा कि–''हमने कुछ बच्चों के अभिभावकों से विभिन्न प्रकार से संबंध स्थापित करने की कोशिश की जैसे कॉल करना, बच्चो द्वारा मौखिक संदेश देना, पत्र–व्यवहार करना इत्यादि। किन्तु पूरे सत्र में एक बार भी अभिभावक नही आए।''
2. कुछ विद्यालय में यह भी कहा गया कि शिक्षक में कुछ बातों, क्रियाकलापों से संबंधित मतभेद हो जाते हैं। जिन्हे सुलझाने मे काफी समय बर्बाद हो जाता है।
3. कुछ विद्यालयों के प्राचार्यों ने कहा कि शिक्षक कभी–कभी विद्यालय समय पर नही पहुंच पाते हैं।
4. विद्यालय में छात्रों द्वारा लगातार कई दिनो तक बिना पूर्व सूचना के अनुपस्थित रहने की बात भी स्वीकार की गई है।

5. दो विद्यालयों में बाउड्रीवॉल नही होने की बात कहकर प्राचार्यों ने कहा कि बाउड्री होने की स्थिति में वे और अच्छे से विद्यालय की सुन्दरता बढ़ा सकते थे।

2 शिक्षकों को समस्याएं–

1. विद्यालयों का मुख्य रूप से इंटीरियर होने के कारण आने–जाने की समस्या होती है। खासकर बरसात के दिनों में जब रास्ते बहुत ज्यादा खराब हो जाते हैं।
2. शिक्षकों से गृहकार्य पर पुछे प्रश्न के जबाब मे उन्होने कहा कि– " विद्यालय के कुछ छात्रों के पालक बहुत कम पढ़े–लिखे हैं जिसके कारण बच्चे दिए गए। गृहकार्य को करके विद्यालय नही आ पाते हैं।"
3. कुछ शिक्षकों ने यह कहा कि विद्यालय ग्राम में निवास तो करते हैं किन्तु विद्यालय मुख्य मार्ग से अन्दर होने के कारण रहने मे समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जरूरत की सारी वस्तु समय पर नही मिल पाती हैं। प्राय वे अपने समान साथी शिक्षकों से मंगाते हैं।
4. शिक्षकों से छात्रों की उपस्थिति के सन्दर्भ में प्रश्न पूछने पर बताया कि बरसात के दिनों मे छात्र खेती–बारी में ध्यान देने लगते हैं। इसलिए विद्यालय मे इस समय उनकी उपस्थिति बहुत कम रहती है।

3 पालकों को समस्याएं–

1. पालकों की मुख्य समस्या यह थी कि बच्चा घर पर अनुशासन मे नही रहता है। इस सन्दर्भ मे एक अभिभावक ने कहा कि उनका बच्चा पढ़ने मे अच्छा है किन्तु घर पर बात नही सुनता है। जब उन्होने शिक्षको से यह बात कही तब उन्होने कहा की छात्र विद्यालय में तो अनुशासन मे रहता है एवं दिए गए निर्देशों का अच्छे से पालन करता है। (सक्षम परिवार के अभिभावक)
2. प्रायः ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों ने कहा कि वे अंग्रेजी माध्यम में नही पढ़े हैं और गृहकार्य में अपने बच्चों की मदद नही कर पाते हैं। अत्यन्त ही कम अभिभावकों की शिक्षा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक हो पाई थी।
3. कुछ पालकों ने यह माना कि वे बच्चों को अपने साथ घर के कामों में मदद करने के लिए लगा देते हैं। जिससे छात्रों की पढ़ाई मे बाधा उत्पन्न होती है। पालको ने प्रायः यह कहा कि 'हमारे लिए कभी–कभी भोजन की कमी पड़ जाती है जिसके जुगाड़ के लिए हम अपने बच्चों को स्वयं काम पर लगा देते हैं या उन्हे घर देखने के लिए छोड़ देते हैं।' (मजदूर वर्ग के अभिभावक)

4 समुदाय को समस्या–

1. समुदाय से लोगों ने कहा कि उन्हे बातचीत करने में समस्या होती है। वह शिक्षकों से किस प्रकार से बात की शुरूआत करेंगे। ग्रामीण समुदाय से एक व्यक्ति ने अपनी बात रखते हुए कहा कि 'मै कोशिश करता हूं कि शिक्षकों से जाकर स्कूल में चलने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में पुछुं लेकिन झिझक के कारण जा नही पाता हूं।' (आम बोलचाल की बोली में अपनी बात कही गई है, जिसे हिन्दी में लिखा गया है।)
2. समुदाय के लोगों ने कहा की प्रायः उनके पास समय की कमी होने के कारण विद्यालय की ओर ध्यान नही दे पाते हैं।
3. एक विद्यालय में वहां के आस–पास के समुदाय के लोगों ने कहा कि अभी के प्राचार्य तो ठीक हैं किन्तु पूर्व के प्राचार्य हमे विद्यालय के कार्यक्रमों में शामिल तक नही करते थे और न ही हमारी किसी बात को ध्यान देते थे।

शैक्षिक निहितार्थ–

विद्यालय के संचालन में समस्याओं का होना कोई नई बात नही है किन्तु इन समस्याओं को दूर करते हुए उचित परिणाम प्राप्त करना मुख्य लक्ष्य होता है। वर्तमान अध्ययन विद्यालय के संचालन की समस्याओं को उजागर कर रहा है। जो कि भविष्य में प्राचार्य, शिक्षक, पालक और समुदाय की समस्या को दूर करने के लिए मार्गदर्शन देगा। इसके अलावा यह अध्ययन शासन को समस्याओं के निराकरण में आवश्यक पहल करेगा।

निष्कर्ष–

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय के संचालन में प्राचार्य, शिक्षक, पालक एवं समुदाय को विभिन्न समुदाय को बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में समस्या उत्पन्न होती है। यदि विभिन्न प्रकार से योजनाओं को लागू करते हुए सही कदम उठाए जावें तो यह समस्याएं आसानी से दूर की जा सकती हैं। इन सभी में मुख्य बात यह निकलकर आती है कि प्राचार्य, शिक्षक, पालक और समुदाय को एक खुले वातावरण में सभी समस्याओं पर विस्तारपूर्वक बात करनी चाहिए। एक–एक करके समस्याओं को ध्यान देते हुए उन्हे यथाशीघ्र दूर करने के उपाय किए जाने चाहिए।

संन्दर्भः

एन.एन.ई.ए. पॉलिसी ब्रीफ(2008). पैरेन्ट, फैमिली, कम्यूनिटी इन्वॉलमेंट इन एजुकेशन. नेशनल एजुकेशन एसोसिएशन.

एनी टी. हेन्डरसन एण्ड केरेन एल. मैप्प(2002)–ए न्यू वेव ऑफ एविडेन्सः द इम्पैक्ट ऑफ स्कूल, फैमिली एन्ड कम्यूनिटी कनेक्शन्स ऑन स्टूडेन्ट अचीव्हमेंट. नेशनल सेन्टर फॉर फैमिली एण्ड कम्यूनिटी कनेक्शन्सस विथ स्कूल्स.एस.ई.डी.एल., टेक्सास

कोल,एस.(2007). टूरिज्म, कल्चर एण्ड डेवल्पमेंटः होप्स,ड्रीम्स एण्ड रियलिटिज इन इस्ट इन्डोनेशिया. क्लेवेडन, यूकेः चैनल वीव पब्लिकेशन

प्रसाद,जी.एन.(2016). कम्यूनिटि पार्टिसिपेशन इन स्कूल एजुकेशन–एन एम्पीरिकल रिविव. जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन. XXX (2),129–154

पुतनम, आर.डी.(2000). बॉलिंग अलोनः द कोलैप्स एण्ड रिवाइवल ऑफ अमेरिकन कम्यूनिटी. एडिटेड बाई एस.ए. सचर, न्यूयार्क

सिंह,आर.(2017). जन–प्रजिनिधियों की शैक्षिक सजगता का अध्ययन. शैक्षिक परिसंवाद. 7(1)

कम्यूनिटी पार्टीसिपेशन इन स्कूल मैनेजमेंट इन डेवल्पींग कन्ट्रीज– ऑक्सफोर्ड रिसर्च एन साइक्लोपिडीया ऑफ एजुकेशन (2017)
https://oxfordre.com/education/view/10.1093/acrefore/9780190264093.001.0001/acrefore-9780190264093-e-64
DOI: 10.1093/acrefore/9780190264093.013.64

***

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 May 2019 No. V

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- नारीवाद : एक विमर्श — 41-46
  प्रो. (डा.) कुमकुम कुमारी, अध्यक्षा, स्नातकोत्तर इतिहास, विभाग, जे. डी. वीमेंस कॉलेज, पटना, (पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय)

- सर्वशिक्षा अभियान का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 47-56
  प्रीति, शोध प्रज्ञा (यू.जी.सी. नेट), समाजशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

- समसामायिक मूल्य संकट और परम्परागत भारतीय दर्शन में इसका समाधान — 57-63
  विकास, शोध छात्र, दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

- भारत की सांस्कृतिक समस्या — 64-66
  डॉ. विक्रमादित्य त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ईश्वर दयाल भगवत् प्रसाद सिंह महाविद्यालय गढ़ नोखा।

- शहर विषयक कविता और ज्ञानेन्द्रपति का काव्य गंगा-बीती — 67-71
  मंगलम कुमार रस्तोगी, शोधार्थी, हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

- मानवेन्द्रनाथ रॉय एवं राधाकृष्ण का राजनीतिक विचार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — 72-77
  अनपूर्णा कुमारी, शोध छात्रा, बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर

- जनपद चम्पावत में ग्रामीण व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन — 78-82
  सन्तोष कुमार सिंह, शोध छात्र, भूगोल विभाग, टनकपुर, राजकीय महाविद्यालय, चम्पावत (उत्तराखण्ड)

- जनपद सुलतानपुर में व्यावसायिक जनसंख्या का प्रतिरुप — 83-89
  आशुतोष मिश्र, शोध छात्र, (यू.जी.सी., जे.आर.एफ.) भूगोल विभाग, एन.जी.बी.यू., इलाहाबाद।

- 'मॉडल स्कूल' एवं सामान्य स्कूलों में सामुदायिक सहभागिता में वाधाएं — 90-94
  भरत प्रसाद गुप्ता, शोधार्थी, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, विलासपुर
  डॉ अनिता सिंह, सहा. प्राध्यापक, प. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, विलासपुर

- जनपद फतेहपुर में जनसंख्या का प्रतिरूप — 95-100
  अविनेश कुमार, शोध छात्र, भूगोल विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

'मॉडल स्कूल' एवं सामान्य स्कूलों में सामुदायिक सहभागिता थें बाधाएं

*भरत प्रसाद गुप्ता **
*डॉ अनिता सिंह ***

लोकतंत्र मे सबको यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपना भविष्य निर्माण अपने अनुसार कर सके। शिक्षा में भी लोकतंत्र को महत्व देते हुए सामुदायिक सहभागिता के रूप में इसे जगह दी गई है। अब समुदाय के सदस्य विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों को अपने अनुसार रूपान्तरित कर सकते हैं एवं अपना सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध में सामुदायिक सहभागिता के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली बाधाओं को जानने का प्रयास किया गया है। आंकड़ों का संग्रहण स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुआ कि सामुदायिक सहभागिता में मानवीय बाधा के रूप मे जानकारी का अभाव, लज्जालु प्रवृति एवं डर, पालकों में हीन भावना, पालकों का शिक्षा स्तर, समुदाय सदस्यों की निरसता, भौतिक बाधाओं में समय की कमी, विद्यालय की दूरी 'एवं सांस्कृतिक बाधा, भाषायी बाधाओं का बोध हुआ।

मुख्य शब्द –मॉडल स्कूल, सामुदायिक सहभागिता, बाधाएं, गुणवत्तायुक्त शिक्षा, भाषायी बाधा

प्रस्तावना– छात्र, विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करके समाज में जाकर वह समाजोपयोगी कार्य करे यह आशा की जाती है एवं समाज को भी यह उम्मीद रहती है कि विद्यालय अच्छे एवं उपयोगी नागरिक समाज को प्रदान करे। इसके लिए यह आवश्यक है कि समाज के अनुसार पाठ्यचर्या का निर्माण हो एवं उसका क्रियान्वयन हो। साथ ही यह भी आवश्यक हाता है कि समाज के सदस्यों द्वारा उसका निरिक्षण समय–समय पर किया जाए एवं उस पर अपने विचार देते रहें। इन सब के साथ लोगों का यह उत्तरदायित्व होता है किवह विद्यालय में अपनी सहभागिता दिखावें एवं विद्यालय के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए अर्थात् स्कूल से संबधित किसी भी प्रकार की समस्याओं पर अपने सुझाव देवें, समस्या का निदान करें एवं अपने द्वारा हो सकने वाले मदद कार्यो को करके विद्यालय के सुचारू संचालन में योगदान प्रदान करें। इसके लिए समुदाय के कोई भी व्यक्ति जैसे– अभिभावक, पंचायत के सदस्य, शाला विकास समिति के सदस्य, ग्रामीण सदस्य एवं कोई भी व्यक्ति जो विद्यालय के विकास के लिए आगे आकर अपना सहयोग देते हुए विद्यालय के विकास को बढ़ा सकते हैं।

---

* शोधार्थी, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
** सहा. प्राध्यापक, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

संबंधित साहित्य की समीक्षा

बॉयर, पी. जी.(1990). ए स्टडी ऑफ द एक्सपेक्टेशन ऑफ द पैरेंट्स ऑफ द चिल्ड्रेन फ्रॉम द टीचर्स एन्ड देयर वार्ड्स कान्सर्निंग एडुकेशनल अचिव्हमेंट में जाना कि अभिभावकों की अपेक्षा शिक्षकों से थी कि हमेशा होमवर्क दे तथा उनकी जांच करे एवं उनके पाल्य के प्रगति के बारे मे उन्हे समयानुसार अवगत करायें। रीजे, लेसले.,एरोज, रेबका मेजिया एन्ड बैजन, एन्टोनियो रे (2011) मेक्सिकन पैरेन्टस एण्ड टीचर्स लिटररी पर्सपेक्टिव्स एण्ड प्रैक्टिसेस कन्सट्रकशन ऑफ कल्चरल केपिटल में पाया कि शिक्षकों को अभिभावकों के साथ सम्प्रेषण एवं उनका बच्चों की शिक्षा में ध्यान तथा पूर्व में अभिभावकों द्वारा किए गए साक्षरता सामग्री का उपयोग छात्रों के प्रदर्शन को प्रभावित करता है।प्रसाद, जी.नगेन्द्र (2016). कम्युनिटी पार्टिसिप्रेशन इन स्कूल एडुकेशन–एन एम्पीरिकल रिवीव में पाया है कि सामुदायिक सहभागिता के प्रभाव से विद्यार्थियों की उपस्थिति तथा नामाकंन के प्रतिशत में वृद्धि दर्ज की गई थी, सामुदायिक सहभागिता से प्रारंभिक स्तर मे विद्यालय मे छात्रों के रूके रहने की दर मे वृद्धि हुई है।सिंह, एल.के. एवं बैनर्जी एस. (2019). एन एनालिसिस ऑफ द बैरियर्स टू पैरेन्ट्स इन्वॉलमेंट इन देयर चिल्ड्रेन्स एजुकेशन में बताया कि अभिभावकों का शिक्षा में भागीदारी में सामान्य रूप से सांस्कृतिक, भाषायी, पर्यावरणीय, मानवीय प्रकृति बाधाएं होती हैं। साथ में अभिभावकों की आय, शिक्षा, जानकारियों का अभाव इत्यादि बाधाएं अभिभावकों के साथ होती हैं।सिंह,आर.(2017). जन–प्रजिनिधियों की शैक्षिक सजगता का अध्ययन. शैक्षिक परिसंवादमें यह पाया कि जन–प्रतिनिधियों की शैक्षिक सजगता औसतन थी एवं विधान सभा और विधान–परिषद् सदस्यों की उच्च स्तर की थी।

अध्ययन के उद्येश्य–इस अध्ययन का मुख्य उद्येश्य शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता में होने वाली विभिन्न बाधाओं का पता लगाना है। इस अध्ययन का उद्येश्य है–

1. विद्यालय में सामुदायिक सहभागिता में होने वाले बाधाओं का पता लगाना।

अध्ययन की अवधारणाएं–अध्ययन के उद्येश्य को ध्यान मे रखकर इस अध्ययन की परिकल्पना है कि विद्यालयों में सामुदायिक सहभागिता में बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

शोध प्रविधि–अध्ययन में मुख्य रूप से सामदायिक सहभागिता में उत्पन्न बाधाओं को जानने की कोशिश की गई है। यह अध्ययन विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोधकार्य में जनसंख्या छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग में स्थित सभी मॉडल स्कूल एवं निकटतम स्थित शा0उ0मा0विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक, समिति सदस्य एवं ग्रामीण समुदाय हैं।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श सरगुजा संभाग में स्थित सभी मॉडल स्कूल एवं निकटतम स्थित शा0उ0मा0विद्यालय के प्राचार्य,दो शिक्षक, एक अभिभावक, एक समिति सदस्य एवं एक ग्रामीण समुदाय हैं।

उपकरण–प्रयुक्त शोधकार्य में शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूचि तैयार किया गया है। यह साक्षात्कार अनुसूचि अर्ध्दसंरचित प्रकार का है। इसमें सामुदायिक सहभागिता के आयाम जैसे–अभिरूचि, सहभागिता, सहयोग इत्यादि को शामिल किया गया है।

परिणाम एवं व्याख्या–

सामुदायिक सहभागिता में बाधाएं–

छात्रों को अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि हम सभी मिलकर उनकी शिक्षा के प्रति ध्यान दें। विभाग एवं समुदाय दोनो की जिम्मेदारी होती है, वह विद्यालय से किस प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर रहा है, इसकी जांच एवं निगरानी की जाए। इसके लिए तैयार किए गए साक्षात्कार प्रश्नावली के आधार पर सामुदायिक सहभागिता में उत्पन्न होने वाले निम्न बाधाओं को पाया गया–

अ) मानवीय प्रकृति बाधा–

1 जागरूकता की कमी– साक्षात्कार के द्वारा यह पाया गया कि 85 प्रतिशत जनसंख्या को यह मालूम नही था कि वे विद्यालय के संचालन में सहयोग कर सकते हैं। एक प्रश्न के जवाब में एक व्यक्ति ने कहा कि " हमारे पास विचार होते हैं स्कूल के विकास और कमी को दूर करने के लिए लेकिन हम नही जानतें थे कि हम विद्यालय जाकर अपने सुझाव दे सकते हैं।"

लज्जालु प्रवृति एवंडर– कुछ एसे अभिभावक थे जो लज्जालु प्रकृति वाले थे। आमने–सामने बात करने में झिझक महसूस करते थे, साथ ही इनमें कम्यूनिकेशन गैप देखने को मिला। जिससे वे शिक्षकों से खुलकर चर्चाएं नही कर पाते थे।

साक्षात्कार में लोगों को यह कहा कि उन्हे विद्यालय में प्रवेश करने पर डर लगता है। कभी हम विद्यालय गए नही है पता नही अन्दर कैसे लोग होगें।

अरूचि– शिक्षकों एवं प्राचार्यों से लिए गए साक्षात्कार में यह बात उजागर हुई की आम ग्रामीणजनों को विद्यालय में बुलाने के बावजूद भी वह बिल्कुल भी नही आते हैं और बहुत ही अधिक प्रयास करने पर कभी–कभार 1 या 2 व्यक्ति ही आ पाते हैं।

पालकों की हीनता– प्राचार्य एवं शिक्षकों ने यह बात कही की बच्चोंके पालकों को उनके मासिक परीक्षा, त्रैमासिक परीक्षा, अर्ध्दवार्षिक परीक्षा परिणामों के सन्दर्भ में बुलाने पर वे नही आते हैं या अत्यन्त ही कम आते हैं लगभक 2 या 3 लोग ही आते हैं और वे भी नियमित नही आते हैं।

पालकों की शिक्षा का स्तर– पालकों से साक्षात्कार में यह पता चला कि उनमें से अधिकतर पालक प्राथमिक शिक्षा ही ग्रहण कर पाए थे। कुछ ही

माध्यमिक शिक्षा एवं अत्यंत कम ही उच्च शिक्षित थे। जो प्रायः कम शिक्षित थे वे सहभागिता नही दिखाते थे।

समुदाय सदस्यों की निरसता– समुदाय के लोग विद्यालय आते हैं किन्तु वह कभी–भी कक्षा का निरिक्षण नहीं करते हैं और न ही छात्रों की परेशानियों का जानने की कोशिश करते हैं। यदि कभी समुदाय के सदस्य अन्य कार्यों से विद्यालय आते हैं तो अन्य बातों को लेकर शिक्षकों के साथ लड़ाई का माहौल हो जाता है।

यह व्यवहार निश्चित ही शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता कि विपरित नजर आता है।

भौतिक बाधाएं–

समय की कमी– ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने इस सन्दर्भ में जवाब देते हुए कहा कि उनके पास समय की कमी होती है। प्रायः दिनभर वे जीविकोपार्जन में लगे रहते हैं।

सामान्य लोगों से एक प्रश्न के जवाब से ज्ञात हुआ कि वह विद्यालय की किसी भी क्रियाकलाप में भाग नही लेना चाहते थे क्योंकि उनके पास अपने कार्यों से फुरसत नही होती है।

विद्यालय की दूरी– कुछ शहरी क्षेत्रा के सदस्यों ने कहा कि विद्यालय की दूरी बहुत दूर होने एवं अत्यन्त ग्रामीण क्षत्रों में होने के कारण वे नही जाते हैं। पर वे परीक्षा परिणाम के समय बच्चों की प्रगति जानने के लिए अवश्य जाते हैं।

अहाता स्थिति– प्रायः कुछ विद्यालयों में अहाता थे किन्तु कुछ विद्यालयों क प्राचार्यों ने यह जानकारी दी की विद्यालय में बाउण्ड्रीवाल नही होने के कारण आवारा तत्व अन्दर प्रवेश कर जाते है। जिससे पढ़ाई प्रभावित होती है।

सांस्कृतिक बाधा– सामान्य ग्रामीण लोगों से बात करने पर पता चला कि उनक ज्राति विशेष में पढ़ाई को इसलिए महत्व नही दिया जाता है क्योंकि उनको पढ़ा–लिखाकर नौकरी नही करवानी है बल्कि वे अपने पैतृक कार्यो को करने को ज्यादा महत्व देते हैं।

भाषायी बाधा– प्रायः ग्रामीण लोगों ने यह स्वीकारा की उनको शिक्षकों के साथ बात करने में भाषा संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हे केवल गांवों में बोली जाने वाली बोली ही जानते हैं और हिन्दी गलतियों के साथ बोल पाते हैं। जिससे वे सोचते हैं कि कहीं उनका मजाक न बन जाए।

योजनाओं से संबंधित अनभिज्ञता– पालकों एवं ग्रामीण समुदाय के सदस्यों में यह पाया गया कि उन्हे सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे बिल्कुल भी नही पता होता था। जिनको पता भी होता था उन्हे विद्यालय द्वारा ही पता चल पाता था। इस सन्दर्भ में एक पालक ने कहा कि– 'सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में हमे कुछ पता नही होता

है। हम तो यह भी नही जानत हैं कि सरकार हमारे बच्चों के लिए योजनाएं भी चला रही हैं।

निष्कर्ष– इस अध्ययन के द्वारा निम्न निष्कर्ष निकलते हैं–

1. मानवीय प्रकृति बाधाओं के कारण सामुदायिक सहभागिता एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने में समस्या होती है।
2. भौतिक बाधाओं के कारण विद्यालय छात्र एवं शिक्षक,पालक इत्यादि को विभिन्न समस्या होती है। जिसके कारण शिक्षा प्रभावित होती है।
3. सांस्कृतिक बाधा के कारण कुछ समुदाय उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर पाते हैं।
4. भाषायी बाधाओं के कारण अभिभावक,समुदाय एवं शिक्षकों के बीच बात नही हो पाती है जिससे अच्छी समझ नही बनती है। जिससे शिक्षा प्रभावित होती है।

सन्दर्भ :

- बॉयर, पी.जी. (1990). ए स्टडी ऑफ द एक्सपेक्टेशन ऑफ द पैरेन्ट्स ऑफ द चिल्ड्रेन फ्रॉम द टीचर्स एण्ड देयर वार्डस कॉन्सर्निनंग एजुकेशनल एचिव्हमेंट. फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च.(1988–92)
- गॉडफ्रे एस., (2016). चैलेन्जेस इम्पैक्टिंग कम्यूनिटी पार्टिसिपेशन एण्ड देयर इफेक्ट ऑन टीचिंग एण्ड लर्निंगः ए केस स्टडी ऑफ रूरल एरियास. यूरोपियन सांइटिफिक जर्नल. 25(12)
- गिना,ए.एन.,चोवा,आर.डी. एवं मासा,जे.टी.(2013).पैरेनटल इन्वॉलमेंट्स इफेक्ट्स ऑन एकेडमिक परफारमेंसःएविडेंस फ्रॉम द युथ सेव घाना एक्सपेरिमेंट. चिल्ड्रेन एंड युथ सर्विसेस रिविव, 35(12), 2020.2030 doi:10.1016/j.childyouth.2013.09.009
- प्रसाद,जी.एन.(2016). कम्यूनिटि पार्टिसिपेशन इन स्कूल एजुकेशन–एन एम्पीरिकल रिविव. जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्टशन. XXX (2),129–154
- रीजे,एल.,एरोज, आर.,मेजिया एवं बैजन,ए.आर.(2011). मेक्सिकन पैरेन्टस एण्ड टीचर्स लिटररी पर्सपेक्टिव्स एण्ड प्रैक्टिसेस कन्सट्रकशन ऑफ कल्चरल. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव स्टडीज इन एजुकेशन. 25(8), 983–1003
- सिंह, एल.के. एवं वैनर्जी एस. (2019). एन एनालिसिस ऑफ द बैरियर्स टू पैरेन्ट्स इन्वॉलमेंट इन देयर चिल्ड्रेन्स एजुकेशन. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च. 9(1)
- सिंह,आर.(2017). जन–प्रजिनिधियों की शैक्षिक सजगता का अध्ययन. शैक्षिक परिसंवाद. 7(1)

***